नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

'मध्यकालीन हिंदी साहित्य का वर्तमान' विषय पर पुनश्चर्या कार्यक्रम का उदघाटन

भक्ति आंदोलन परिवर्तन का विराट प्रयास था -प्रो. निर्मला जैन

हिंदी विश्वविद्यालय का आयोजन

वर्धा दि. 16 फरवरी 2016: भक्ति आंदोलन परिवर्तन का विराट प्रयास था। यह आंदोलन तीन सौ पचास वर्ष

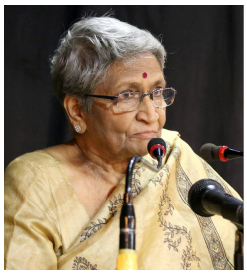
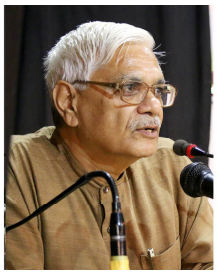

तक चला और एक लंबी प्रक्रिया तथा लंबी साधना के साथ उसने जनसामान्य को जोड़ने का काम किया। इसे एक अनन्यसाधारण आंदोलन का जा सकता है। उक्त विचार हिंदी की वरिष्ठ आलोचक प्रो. निर्मला जैन ने व्यक्त किये। वह महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना पं. मदन मोहन मालवीय शिक्षा मिशन के अंतर्गत विश्वविद्यालय में स्थापित हिंदी का शिक्षण प्रशिक्षण केंद्र के द्वारा 16 फरवरी से 28 फरवरी तक आयोजित 'मध्यकालीन हिंदी साहित्य का वर्तमान' विषय पर पुनश्चर्या कार्यक्रम के उदघाटन के अवसर पर बोल रही थी। इस कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में मंगलवार को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की।

उदघाटन समारोह में मंच पर प्रो. रमेश कुंतल मेघ, साहित्य विद्यापीठ के अध्यक्ष प्रो.सूरज पालीवाल, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, कार्यक्रम के संयोजक डॉ. वीर पाल सिंह यादव मंचस्थ थे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित इ-पत्रिका 'निमित्त' का विमोचन प्रो. निर्मला जैन द्वारा क्लिक कर किया गया। उदघाटन वक्तव्य में प्रो. निर्मला जैन ने कहा कि कोई भी भाषा अपने साहित्य की वजह से समृद्ध तथा मजबूत होती है और ब्रज भाषा इसका एक उत्तम उदाहरण है। ब्रज का अखिल भारतीय स्वरूप था। उन्होंने भक्ति काल एवं रीति काल की चर्चा करते हुए कहा कि हाल के दिनों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का क्रम बदल गया है। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि इस क्रम को बदलने के लिए क्या साहित्य उपयोगी हो सकता है। उन्होंन कबीर, सुरदास एवं तुलसी के काल को उधृत करते हुए कहा कि उनके कार्यकाल को ध्यान में रखकर हमें भक्ति काल को देखना चाहिए। उन्होंने कहा कि भक्ति साहित्य जनाधार का साहित्य था और यही वजह है कि उसने परिवर्तन का आंदोलन खड़ा किया। कबीर ने असाधरण की शक्ति के मिथक को तोडकर अनन्यसाधारण का काम किया। वर्तमान समय की व्याख्या करते हुए उनका कहना था कि आज भूमंडलीकरण यानी बाजारवादी व्यवस्था का समय है। आज का समाज इस व्यवस्था में जानकार तो बना परंतु वह विवेकवान नहीं बन रहा है। विवेकवान समाज बनाने का दायित्व साहित्य को लेना चाहिए।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि मध्यकालीन साहित्य सामाजिक जीवन में घूला-मिला था। कबीर, सुरदास और तुलसी ने अपना रचनात्मक हस्तक्षेप करते हुए समाज के लिए एक नया मॉडल

प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी समय की समस्याओं को पहचान कर उसके प्रति संघर्ष किया। उन्होंने जानकारी दी कि नैक द्वारा विश्वविद्यालय को 'ए' ग्रेड मिला हुआ है। इसकी कड़ी में हमने विश्वविद्यालय में 'भक्ति काल का उच्च अध्ययन केंद्र' बनाने का प्रस्ताव तैयार किया है। इस इवसर पर प्रो. रमेश कुंतल मेघ ने भी मध्यकाल और उसका डायस्पोरा की दृष्टि से योगदान पर अपने विचार रखे।
स्वागत वक्तव्य साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. सूरज पालीवाल ने दिया तथा विषय का प्रयोजन अधिष्ठाता प्रो. के. के. सिंह ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विद्यार्थी मंगेश भुरसे, मेघा और गजेंद्र पांडे ने तुलसी, मीरा और कबीर के गीत प्रस्तुत किए। विश्वविद्यालय के कुलगीत से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, आवासीय लेखक प्रो. अजीत दलाल, प्रो. देवराज, प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, प्रो. अनिल कुमार राय, प्रो. सुरेश शर्मा, डॉ. प्रीति सागर, डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, सहायक प्रोफेसर डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. रूपेश कुमार सिंह, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. सुप्रिया पाठक, डॉ. आर. पी. यादव, राकेश मिश्र, डॉ. अमरेंद्र शर्मा, हरप्रीत कौर, डॉ. रवींद्र बोरकर, अशोक मिश्र, के. के. त्रिपाठी, बी. एस. मिरगे आदि सहित विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधि, अध्यापक एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संयोजक डॉ. वीर पाल सिंह यादव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा ने किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

28 फरवरी तक चलने वाले इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतिभागियों के मार्गदर्शन हेतु चंडीगढ़ से लखनऊ से प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, दिल्ली से प्रो. ओम प्रकाश सिंह, प्रो. दुर्गा प्रसाद गुप्त, डॉ. बलराम शुक्ल, वाराणसी से प्रो. चौथीराम यादव, गोरखपुर से प्रो. चित्तरंजन मिश्र, गुजरात से प्रो. दयाशंकर त्रिपाठी महाराष्ट्र से प्रो. भारती गोरे, प्रो. वीणा दाढ़े जैसे प्रबुद्ध विद्वान उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम का समापन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक के कुलपति प्रो. टी.वी. कट्टीमनी की उपस्थिति में होगा।